सत्य गुरु कबीर

Satya Guru Kabir

Sandhya Path - Special Issue / सन्ध्यापाठ विशेषाङ्क

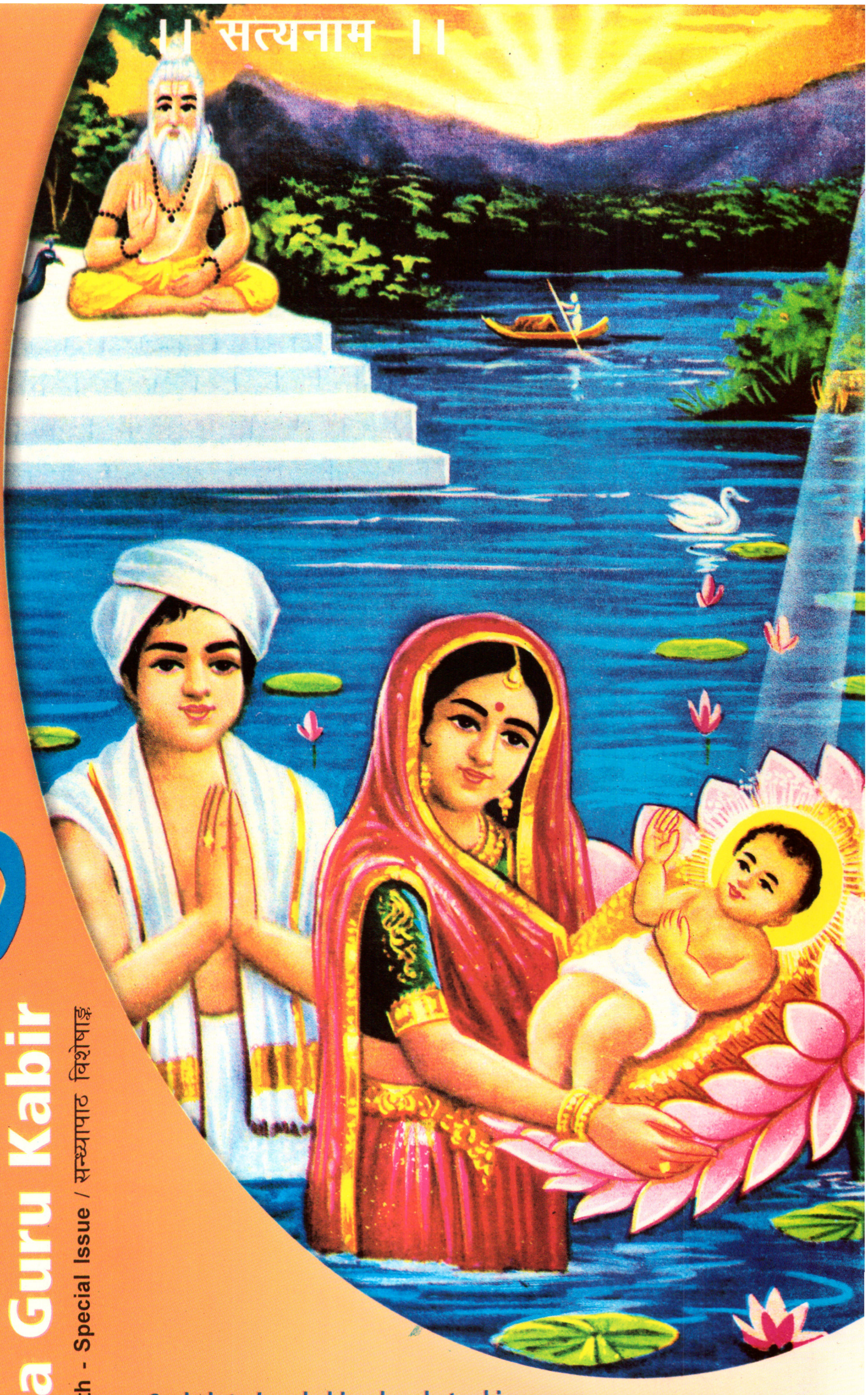

Saaheb teri saahebi, saba ghat rahi samaay
Jyon mehendi ke paat me, laali lakhi na jaay

The godliness of the paramaatma is present in everything, just like the undiscernable red colour in the mehendi leaves. And as on crushing the leaves that the reddish tint appears, likewise this godliness appears only when one uses one's mind to see it.

Shree Kabir Council
La Caverne, Vacoas

Shree Satya Kabir Muktamaneenaam
Dharmic Sabha – Pointe Aux Piments

Mahaprabhu Kabir Dharmasthan
Morcellement St. André

Scheme of Transliteration

अ	a	अं	ṃ	छ	cha	थ	tha	र	ra
आ	ā	अः	ḥ	ज	ja	द	da	ल	la
इ	i	ऋ	ṛ	झ	jha	ध	dha	व	va
ई	ī	लृ	ḷ	ञ	ña	न	na	श	śa
उ	u	क	ka	ट	ṭa	प	pa	ष	ṣa
ऊ	ū	ख	kha	ठ	ṭha	फ	pha	स	sa
ए	e	ग	ga	ड	ḍa	ब	ba	ह	ha
ऐ	ai	घ	gha	ढ	ḍha	भ	bha	क्ष	kṣa
ओ	o	ङ	ṅa	ण	ṇa	म	ma	त्र	tra
औ	au	च	ca	त	ta	य	ya	ज्ञ	gya

।। भजन ।।

।। सत्यलोक - वर्णन ।।

सन्तो ! सो निज देश हमारा ।।
जहाँ जाय फिर हंस न आवे, भवसागर की धारा ।। टेक ।।
सूर्य चन्द्र नहिं तहाँ प्रकाशत, नहिं नभ मण्डल तारा ।
उदय अस्त दिवस नहिं रजनी, बिना ज्योति उजियारा ।। १।।
पांच तत्त्व गुण तीन जहाँ नहीं, नहीं तहाँ सृष्टि पसारा ।
तहाँ न माया कृत प्रपंच यह, लोग कुटुम्ब परिवारा ।। २।।
क्षुधा तृषा नहिं शीत उष्ण तहाँ, दुःख सुख को संसारा ।
आधि न व्याधि उपाधि कछू तहाँ, पाप पुण्य विस्तारा ।। ३।।
ऊंच नीच कुल की मर्यादा, आश्रम वर्ण विचारा ।
धर्म-अधर्म तहाँ कछु नाहीं, संयम नियम आचारा ।। ४।।
अति अभिराम धाम सर्वोपरि, शोभा जासु अपारा ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ! तीन लोक से न्यारा ।। ५।।

|| bhajana ||

|| Satyaloka varṇana ||

saṇto ! so nija deśa hamārā
jahān jāya phira haṇsa na āve, bhavasāgara kī dhārā || ṭeka ||
surya caṇdra nahin tahān prakāśata, nahin nabha maṇḍala tārā |
udaya asta divasa nahin rajanī, binā jyoti ujiyārā || 1 ||
pāṇca tattva guṇa tīna jahān nahīn, nahīn tahān sriṣṭi pasārā |
tahān na māyā krita prapaṇca yaha, loga kuṭuṃba parivārā || 2 ||
kṣudhā triṣā nahin śīta uṣṇa tahān, duhkha sukha ko saṇsārā |
ādhina vyādhi upādhi kachū tahān, pāpa puṇya vistārā || 3 ||
unca nīca kula kī maryādā, āśrama varṇa vicāra |
dharma-adharma tahān kachu nāhīn, sanyama niyama ācārā || 4 ||
ati abhirāma dhāma sarvopari, śobhā jāsu apārā |
kahaiṇ kabīra suno bhāī sādho ! tīna loka se nyārā || 5||

आचार्य महंत संत सर्वेश्वर दास शास्त्री

|| Satyanaam ||

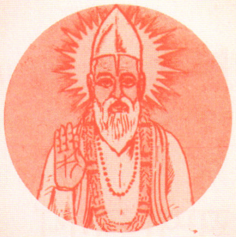

Satya Guru Kabir

A Quarterly Journal on the teachings of Sadguru Kabir Saheb.

Kabīrābd 604 āṣāḍha-śrāvaṇa-bhādrapada 2059 July - August - September 2002 Vol. 1. No. 2

Founder
M. Komaldass

H. Chief Editor
Acharya Mahant
Sant Sarveshwar Das Shastri
Saahitya-Vyaakaran-Vedaanta Saankhyayogaachaarya-LLB

Editor in Chief
M. Amardass

Board of Editors
Poorundass, Rajiv
M. Ravindradass
M. Prabhatdass

Advisor
Rajnarain

Address
4, Mosque Road
Morcellement St Andre
Plaine des Papayes
Mauritius

P.O. Box 637
Port Louis, Mauritius

Tel. (230) 261 7708
(230) 261 7773

e-mail: satyaguru_kabir@hotmail.com

Subscription
4 yearly issues
Yearly subscription Rs 100.00
Unit Price Rs 25.00

Printed at
Globe Printing 41-Wellington st.,
Port Louis. ☎ 208-1863

Sākhī

गुरु धोबी सिस कापडा, साबुन सिरजनहार ।
सुरति शिला पर धोईए, निकसे ज्योति अपार ॥

guru dhobī sisa kāpaḍā, sābuna sirajanahāra ।
surati śilā para dhoīye, nikase jyoti apāra ॥

Guru is like a washerman and disciple is like cloth; God Himself is the soap; O Guru ! Please wash my thought-waves on the stone of meditation, then unlimited light will appear.

Commentary:
When the Guru gives the gift of God's name to the disciple and the disciple recites it, his heart is cleansed. Thus, with the help and guidance of the Guru, the disciple reaches the destination which is God realization.

गुरु बिन ज्ञान न उपजे, गुरु बिन मिले न मोक्ष ।
गुरु बिन लखे न सत्यको, गुरु बिन मिटे न दोष ॥

guru bina gyāna na upaje, guru bina mile na mokṣa ।
guru bina lakhe na satyako, guru bina miṭe na doṣa ॥

Without the Guru no one obtains spiritual knowledge or achives salvation;
Without the Gur no one can see Truth or have his doubts removed.

Commentary :
Importance of the Guru is mentioned in this sakhi. To achieve the higher stages on the spiritual path, and to succeed in the world, one needs guidance of the Guru all the time to overcome obstacles on the spiritual path.

गुरु बिचारा क्या करे, सिखखहि माहि चूंक ।
भावे त्यों परबोधिये, बांस बजाये फूंक ॥

guru bicārā kyā kare, sikkhahi mahi cūṇka ।
bhāve tyon parabodhiye, bansa bajāye phūṇka ॥

What can the poor Guru do if the disciple has faults;
He gives knowledge but it becomes useless, just as a broken flute does not produce music.

Commentary:
The disciple must have faith, courage, and patience on the path of God. He must try to accept discriminative spiritual knowledge from the Guru and keep it in his mind. If he does not, the Guru cannot be blamed, because the Guru can only guide, but the disciple has to walk himself.

Commentary by **Acharya Mahant Jagdish Das Shastri**
Jamnagar, Gujarat, India.

Cover : The picture on the front cover depicts the appearance of Sadguru Kabir Saheb on the lotus flower. In the Lahar Talab of Kashi 'Baba' Gowreeshunkur (Niru) and 'mata' Saraswati (Nima) lifting baby Sadguru Kabir Saheb and in the background the witness of this divine appearance in meditation 'dhyaana magna' Swamy Shree Ashtanand Ji .

No part of this publication may be reprinted or otherwise reproduced without the prior permission from the chief editor.
The opinions and thoughts expressed in the articles published in this journal are those of the writers and not those of the Satya Guru Kabir committee.

www.geocities. com/sahebkabir

सम्पादकीय

नौम्यादिब्रह्म सर्वस्य, कारणं करणं तथा ।
तद्रूपं सद्गुरुं वन्दे, कर्म रेखा प्रशान्तये ॥ (ब्रह्मनिरूपणम् -१)

समस्त संसार की उत्पत्ति के कारण और साधन रुप सत्यपुरुष को एवं कर्मों की रेखा को मिटाने वाले सत्यपुरुष स्वरूप सदगुरु को "साहेब बन्दगी" है। प्रणाम है। नमन है।

किसी भी वस्तु के निर्माण में दो प्रमुख कारण होते हैं, प्रथम 'उपादान कारण' जो उस वस्तु के साथ स्थायी होता है। जैसे वस्त्र के निर्माण में 'धागा'। घट के निर्माण में 'मिट्टी'। आभूषण के निर्माण में 'सुवर्ण' या 'रजत'। किन्तु इनके निर्माण में लगे श्रम या यन्त्रों का उपयोग 'निमित्त कारण' होता है, जो वस्तु के देखने से प्रत्यक्ष नहीं होता।

सत्यपुरुष परमात्मा ने स्वत्व पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु द्वारा इस जगत् की सृष्टि की, ये सभी उन्हीं के भाग हैं। अतः सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं :- "सब घट मेरी सांईयाँ, सूनी सेज न कोय" या "एक राम का सकल पसारा।" परमात्मा स्वयं उपादान कारण एवं निमित्त कारण, कारण व करण दोनों हैं - "स ऐच्छतलोकाऽऽनुर्सज।" इच्छाशक्ति द्वारा उन्होंने सृष्टिकार्य को सम्पादित किया।

विश्व के सभी धर्म-सम्प्रदाय-मत-पंथ उसी सत्यपुरुष परमात्मा के अन्वेषण में तत्पर हैं। वेदों ने अनेक प्रकार से उसका वर्णन करने का प्रयास किया किन्तु "नेति-नेति" कहकर उसको पूर्णरूप से वर्णन करने में असमर्थता व्यक्त कर शान्त हो गये। क्योंकि वह वाणियों का विषय ही नहीं है। सद्गुरु बीजक में कहते हैं : "जाकर नाम अकहुआ रे भाई। ताकर काह रमैनी गाई।"

किन्हीं सद्गुरु के बताये हुए साधना-भक्ति द्वारा भक्त की कर्म रेखायें अर्थात् कर्म-भोग जब शान्त हो जाते हैं तब उस परमात्मा की प्राप्ति का साधन सुलभ हो जाता है। निश्चय ही इस कर्म-रेखा के शमन हेतु दैनिक सन्ध्या-सुमिरण-आरती सशक्त सोपान है। भारत एवं अन्य देशों में जहां भी सद्गुरु के अनुयायी हैं वे अवश्य इसका पालन करते हैं। आंग्ल-भाषी भक्तों की सुविधा एवं उनके अनुरोध का सुविचार कर यह अंक "सन्ध्या-पाठ" के निमित्त समर्पित किया गया है। दैनिक जीवन में इसका उपयोग कर आप सभी आत्मसुख की प्राप्ति करें यही मंगलकामना है। लेख का विस्तार न कर पाठकों की ज्ञान वृद्धि हेतु "कबीर" शब्द की व्याख्या दी जा रही है। जो "श्रीमद् ब्रह्मनिरूपणम्" ग्रन्थ 'स्व-संवेद' से साभार उद्धृत है।

"कबीर" शब्द की व्याख्या

कबीर नाम सबसे बड़ा, सबसे बड़ा विचार।
यथा नाम गुण है तथा, जाने जानन हार ॥

अर्थात् सत्यगुरु कबीर साहिब का नाम सर्व से बड़ा, इस कारण से है कि आपका विचार सबसे महान है। जैसा आपका नाम "कबीर" है। (अरबी भाषा में 'कबीर' इस नाम-शब्द का अर्थ सबसे बड़ा अथवा खुदा, मालिक, परमात्मा होता है।) ऐसे ही आप में सबसे बड़े महान गुण भी हैं। इस वृत्तान्त को जानने वाले विद्वान् व्यक्ति जानते ही हैं; और संस्कृत भाषा में भी "कबीर" शब्द के अनेक अर्थ होते हैं, जिनमें से कुछ अर्थ यहाँ पर दिये जाते हैं।

(१) पहला अर्थ :- "कश्चात्मनि मयूरे च" इस 'एकाक्षरी कोष' के अनुसार 'कश्चासौ बीरश्चेति कबीरः'। इस व्याख्या के अनुसार 'कबीर' शब्द का अर्थ 'आत्मवीर' होता है। जिसने कि काम, क्रोधादिक प्रबल शत्रुओं को जीतकर आत्म-साम्राज्य स्थापित किया है, और उसका सम्राट् बना है।

(२) दूसरा अर्थः- "कम् = आत्मानं विशेषेण ईरयते (प्रेरयते) इति-कबीर :।" अर्थात् जो साधक की आत्मा को परमात्मा की प्राप्ति के लिये विशेष रूप से प्रेरणा दे उसको 'कबीर' कहते हैं। तथा 'कम् = आत्मानं विशेषेण गमयते, इति 'कबीरः'। जो जीवात्मा को परमात्मा की तरफ विशेष रूप से ले जावे उसको 'कबीर' कहते हैं। तथा, कम् = सुखं विशेषेण-प्रेरयते इति 'कबीरः' अर्थात् जो निजानन्द को विशेष रूप से प्रेरित करे उसको 'कबीर' कहते हैं।

(३) तीसरा अर्थ :- 'केन = आत्मना वीरः कबीरः'। अर्थात् जो बलवान आत्मा के द्वारा वीर हो उसी को 'कबीर' कहते हैं। क्योंकि 'नैष आत्मा दुर्बलेन लभ्यः' अर्थात् दुर्बल मनुष्य आत्म-लाभ नहीं कर सकता है। इस श्रुति के अनुसार बलवान आत्मा ही आत्म-लाभ कर सकता है।

(४) चौथा अर्थ :- 'कस्मै = आत्मने, आत्मानं प्राप्तुं विशेषेण ईरयते, इति कबीरः'। अर्थात् जो निजात्म प्राप्ति के लिये जिज्ञासु लोगों को विशेष रूप से प्रेरित करे उसको 'कबीर' कहते हैं। तथा 'कस्मै = सुखाय, सुख प्राप्तुं जनान् विशेषेण प्रेरयते' इति 'कबीरः'। अर्थात् निजानन्द-प्राप्ति के लिये मुमुक्षुओं को विशेष रूप से जो प्रेरित करे उसको 'कबीर' कहते हैं।

(५) पाँचवा अर्थ :- 'कस्मात् = आत्मन : आत्मनोर्हेतोर्वीरः कबीरः'। अर्थात् बलवान् आत्मा के कारण जो वीर हो उसको 'कबीर' कहते हैं। तथा 'कस्मात् = सुखात् हेतोर्वीरः कबीरः'। अर्थात् पूर्णनिजानन्द के कारण जो वीर हो उसको कबीर कहते हैं।

(६) छट्ठा अर्थ :- 'कस्य = सुखस्य साधने वीरः कबीरः'। अर्थात् जो निजानन्द के साधने में वीर हो उसको 'कबीर' कहते हैं। तथा 'कस्य = आत्मनः साधने वीरः कबीरः'। अर्थात् जो आत्म-साधन में वीर हो उसको कबीर कहते हैं। तथा 'कस्य-आत्मनः प्राप्त्यै वीरः कबीरः'। अर्थात् जो आत्म-प्राप्ति के लिये वीर बना हो उसको 'कबीर' कहते हैं। तथा, 'कस्य = सुखस्य प्राप्त्यै वीरः कबीरः' अर्थात् निजानन्द की प्राप्ति

Satya Guru Kabir

के लिये जो वीर बना हो उसको 'कबीर' कहते हैं। 'कयोः लौकिक-पारलौकिकसुखयोः प्राप्त्यै लोकान् विशेषण प्रेरयते, इति कबीरः'। अर्थात् अभ्युदय और निःश्रेयस की प्राप्ति के लिये अधिकारी पुरुषों को जो प्रेरित करे उसको 'कबीर' कहते हैं।

(७) सातवाँ अर्थ :- 'कस्मिन् = आत्मनि वीर : कबीरः।' अर्थात् जो निजात्मा में वीर हो उसको 'कबीर' कहते हैं। तथा, 'कस्मिन्-सुखे विशेषेण ईरयते, इति कबीरः'। अर्थात् निजानन्द में मुमुक्षुओं को विशेष करके प्रेरित करे उसको 'कबीर' कहते हैं। तथा 'कयोः सुखयोः लौकिकपारलौकिकयोरभ्युदयनिः-श्रेयसयोर्विशेषेण लोकान् ईरयति इति कबीरः'। अर्थात् अभ्युदय और निः श्रेयस रूप जो लौकिक और पारलौकिक सुख हैं, उनमें सज्जनों को जो विशेष रूप से प्रेरित करे उसको 'कबीर' कहते हैं। तथा, 'केषु = मुक्तात्मसु मध्ये वीरः कबीरः'। अर्थात् मुक्तात्माओं में जो वीर हो उसको 'कबीर' कहते हैं।

अन्य प्रकार से अर्थ

(१) 'कवीनीरयति इति कबीरः' अर्थात् सत्कवियों को जो अध्यात्म कविता के लिये प्रेरित करे उसको 'कबीर' कहते हैं।

[कबीर साहिब की रहस्यवादी कविता विश्वविदित है। और उसके अवलम्ब से कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ जी टैगोर को 'गीताञ्जलि' के रचने पर 'नोबुल पुरस्कार' प्राप्त हुआ था। यह बात जगजाहिर है।]

(२) 'कविर्मनीषी परिभूःस्वयंभूः'। (ईशावास्योपनिषद् मंत्र ५)। इस श्रुतिवचन के अनुसार कविः नाम परमात्मा का है। और 'ईरणं ईरः प्रेरणा ' इस निरुक्ति से 'ईर' नाम प्रेरणा का है। 'कविना-ईश्वरेण प्रदत्ता प्रेरणा यस्मिन् सः कबीरः'। अर्थात् जिसके हृदय में सदैव ईश्वर की प्रेरणा होती हो (किन्तु मन की प्रेरणा न होती हो), उसको 'कबीर' कहते हैं।

(३) 'कवये ईरः यस्मात् स, कबीरः'। अर्थात् जिज्ञासुओं को जिनके द्वारा ईश्वर-प्राप्ति के लिये प्रेरणा मिलती हो उसको 'कबीर' कहते हैं।

(४) 'कवेः ईरो यस्मिन् स कबीरः'। अर्थात् ईश्वर की प्रेरणा जिसमें हो उसको 'कबीर' कहते हैं।

(५) 'कवौ = ईश्वरे ईरो यस्मात् स कबीर :'। अर्थात् मुमुक्षुओं को जिनकी वाणी से ईश्वर में श्रद्धा - भक्ति रूप प्रेरणा मिलती हो उसको 'कबीर' कहते हैं।

(६) "कश्चैवं केवलं ब्रह्म, बकारो बीजमव्ययम्।
रकारो रमते नित्यं, स कबीरः प्रकथ्यते ॥"
"कक्का केवल ब्रह्म है, बब्बा बीज शरीर।
ररा सब में रम रहा, वाका नाम कबीर ॥"
"पानी से पैदा नहीं, श्वासा नहीं शरीर।
पांच तत्त्व जाके नहीं, ताका नाम कबीर ॥"

(१) अब 'साहिब' यह शब्द (हिवि, प्रीणनार्थे) स आङ् पूर्वक इस धातु से सिद्ध होता है। "सह आसमंतात् हिन्वतीति साहिबः ॥"

(२) तुलसीकृत 'रामचरितमानस' में 'साहिब' शब्द आता है। बालकाण्ड में और अयोध्याकाण्ड में जैसा कि :-

गई बहोरि गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू ॥
लोकहुँ वेद सुसाहिब रीति। विनय सुनत पहिचानत प्रीति ॥

दोहा:- होहुँ कहावत सब कहत, राम सहत उपहास।
साहिब सीतानाथ से, सेवक तुलसीदास ॥

सुनि मुनि बचन राम रूख पाई। गुरु साहिब अनुकूल अघाई ॥
आज्ञा सम नहिं साहिब सेवा। सो प्रसाद जनु पावे देवा ॥

"साहिब" शब्द का प्रयोग सत्यगुरु कबीर साहिब ने अनंत बार किया है जो सभी सत्यपुरुष परमात्मा का ही द्योतक है जैसे :-

"साहिब सबका बाप है, बेटा किसी का नाहिं।
बेटा होकर अवतरे, सो तो साहिब नाहिं ॥१॥"
"साहिब केरि साहबी, सब घट रही समाय।
ज्यों मेंहदी के पात में, लाली लखी न जाय ॥२॥"

॥ इति सत्यम् ॥

3 days Bramha Nirupanam Katha

The Muktamaninaama Dharmic Sabha organised a 3 days Bramha Nirupanam Katha on the 21st,22nd and 23rd of June 2002 on the occasion of the '604th Shree Sadguru Kabir Pragatya Mahotsav'. Acharya Mahant Sant Sarveshwar Das Shastri of Varanasi, India delivered the katha in which also participated M.Komaldass ji,Amardass ji,Charandas ji, Dhineshdass ji and Ravindradass ji. The function started with a 'sobha yatra' on Friday the 21st and was concluded by the laying of the foundation stone of a Shree Sdaguru Kabir Mandir at Soomaru Lane Pointe Aux Piments by the Honourable Deputy Prime Minister of Mauritius, Mr Paul Raymond Berenger, in the presence of the High Commissioner of India, Mr Vijay Kumar and other members of parliament on Sunday 23rd of June. The Shree Kabir Council of La Caverne, Vacoas ,the Mahaprabhu Kabir Dharmasthan of Morcellement St. André and other Kabir Panth associations of Mauritius helped throughout the 'mahotsav'. The last day 'Satvick Anandi Chawka' was performed by M. Prabhatdass saheb. ■

Launching of the 'Satya Guru Kabir' magazine

The Kabir Panth associations of Mauritius have joined hands to publish the 'Satya Guru Kabir' a quaterly religious magazine on the teachings of Sadguru Kabir Saheb.

The first inaugural issue of the publication was presented to the public on the last day of the Bramha Nirupanam Katha at Pointe aux Piments, by the Honourable Paul Raymond Berenger, the Deputy Prime Minister and Minister of Finance, the High Commissioner of India, Mr Vijay Kumar, assisted by the Presidents of the Kabir Council, the Muktamaneenaam Dharmic Sabha, the Mahaprabhu Kabir Dharmasthan - Mr Ravishankar Mungra, Mr Dayanand Soobhug and Mr Adnathdass Brijmohan respectively.

Were also present to bless this special moment, Acharya M. Sant Sarveshwar Das Shastri, M. Komaldass, M. Prabhatdass, M. Amardass and M. Ravindradass.■

थोड़ा सुमिरण बहुत सुख

सत्यलोकवासी श्री १००८ वंश प्रतापी पं. श्री हजूर प्रकाशमणिनाम साहेब श्री कबीर धर्मस्थान खरसिया (छत्तीसगढ़) - भारत

परम सुख की प्राप्ति के लिये संसार अधीर है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो ज्ञात होगा कि, प्रत्येक प्राणी की क्रिया सुख ही के लिये है। वह सुख का श्रोत कहाँ है, जिसकी खोज में सारा संसार पड़ा है ? वह प्रकाश की धारा किधर है, जिससे सारे व्यवहार चल रहे हैं ? वह अमृत का समुद्र कहाँ है, जिसकी एक बून्द से संसार का सारा हालाहल अमृत जान पड़ता है ? उस देव का मन्दिर कहाँ है, जिसके एक बार के दर्शन से संसार ही का अदर्शन हो जाता है ? वह सूर्य किस दिशा से ऊगता है, जिसके प्रकाश की धारा सीधी हृदय की गुफा में पहुँच कर जीवन को ज्योतिर्मय बना देती है ? वह संजीवनी बूटी किस पहाड़ और जंगल में है, जिसको पीनेवाला अमर बन जाता है ? ऐसे प्रश्न करने वाले क्यों इतने अधीर बन कर उसकी खोज में जी-जान से लगे हैं ? इसका उत्तर सारे महात्मा एक स्वर से यही देते हैं किः- 'संसार दुःखरूप है। सर्वं दुःखं दुःखम्' (बौद्ध दर्शन)।

"परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्त्यविरोधाच्च दुःखमेव सर्वविवेकिन ः" (योग दर्शन पा॰ २ सू॰ १५) और दुःख में पड़े हुये व्यक्ति का सुख चाहना स्वाभाविक ही है।

यद्यपि "प्रारब्धकर्मणां तु भोगादेव क्षय ः" इसके अनुसार वर्तमान दुःख की निवृत्ति भोगों के बिना नहीं हो सकती है; तथापि "हेयं दुःखमनागतम्" (योगदर्शन पा॰२ सूत्र १६) इसके अनुसार आगामी दुःख की निवृत्ति के लिये अवश्य प्रयत्न करना चाहिये।

वह प्रयत्न क्या है ? इसका उत्तर उपनिषद् के शब्दों में "ज्ञात्वा देवं सर्व दुःखप्रहाणिः" यह है। अर्थात् उस देव के साक्षात्कार से सबके सब दुःख दूर हो जाते हैं। यह देव वही है कि, जिसकी खोज में सब लगे हैं। उसके साक्षात्कार के अनेक साधनों में से सबों से सरल साधन 'स्मरण' है।

"सुमिरण मारग सहज का, सतगुरु दिया बताय।
सांसहि सांस जो सुमिरतां, एक दिन मिलसी आय ॥"

स्मरण एक ऐसा साधन है कि, जो सहज ही साहब से मिला देता है। हृदय के मन्दिर में विराजे हुये साहब के दर्शनों के लिये स्मरण का रास्ता पकड़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह रास्ता बड़ा सुगम है। इस पर बाल, वृद्ध स्त्रीपुरुष, रोगी और निरोगी सब कोई चल सकते हैं। और तो क्या ! बैठे-बैठे और पड़े-पड़े भी रास्ता तय किया जा सकता है :-

"बैठे-सूते पड़े उतान, कहँहिं कबीर हम वही ठिकान "।

यह स्मरण का कार्य कितना सुगम और अनंत फल का देने वाला है, इसका वर्णन नहीं किया जा सकता है।

"थोड़ा सुमिरण बहुत सुख, जो करि जाने कोय।
सूत न लगै बिनावनी, सहजे तन सुख होय ॥"

अपार फल के देने वाले ऐसे सुगम कार्य को तो रातदिन करना चाहिये। यदि इस शुभ कार्य के लिये अधिक समय न मिले तो सन्ध्या समय तो अवश्य ही करना चाहिये। सन्ध्या समय जिन स्तोत्रों के द्वारा सद्गुरु का स्मरण किया जाता है, उसका वर्णन सन्ध्या-पाठ में किया गया है।

सन्ध्या-पाठ में मंगलाचरण, गौड़ी, आरती, ज्ञानस्तोत्र, विज्ञानस्तोत्र, दयासागर, चेतावनी, ज्ञानगुदड़ी और प्रार्थना; रखी गई है। पाठकगण इनके पाठ से लाभ उठायेंगे। ज्ञानस्तोत्र और विज्ञानस्तोत्र में ज्ञानी और विज्ञानियों के लक्षण तथा उनके अनुभव का वर्णन किया है और बीच-बीच में प्रमाण रूप से श्रुति और स्मृति भी दी गई है। दयासागर में पंच-कुण्डों के वर्णन के पश्चात् छठवें 'अकह कुंड' का वर्णन किया है। और चेतावनी में अभ्यास की शैली का पूरी तरह वर्णन किया गया है। सहज योग में हठयोग के अंगों का उपयोग करने की शिक्षा देकर चेतावनी में सचमुच सोने में सुगन्ध मिला दी है। चेतावनी में बताई हुई अभ्यास की प्रणाली सहज होने के कारण सुसाध्य है। इसलिये सेवकों को दीक्षा के समय इसकी शिक्षा अवश्य देना चाहिये। क्योंकि, अभ्यास-युक्ति के बिना मन का निरोध नहीं हो सकता है। कुछ वर्षों के पहले अभ्यास की परिपाटी कबीर-पन्थ में सर्वत्र प्रचलित थी। इसी कारण कबीर-पन्थ से निकली हुई अनेक शाखा और प्रशाखाओं में शब्दयोग का खूब ही प्रचार हुआ। मालूम होता है कि, अन्य शाखाओं में शब्द-योग के प्रचार कर देने से ही अपने-आपको कृत-कार्य समझकर हम कबीर-पन्थी अपने परंपरागत अभ्यास में कुछ शिथिल से हो गये हैं। अस्तु, 'गयी सो गयी अब राख रही को'। तथा -

"बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेय।
जो बनि आवे सहज में, ताही में चित देय ॥"

सद्गुरु के इस वचनानुसार हम लोगों को अब फिर सहज योग के प्रचार में विशेष प्रयत्न करना चाहिये।

ज्ञान गुदड़ी में छिपे हुये हीरों और लालों का भी इसमें खूब वर्णन किया गया है। और अन्त में प्रार्थना की स्तुति और साखियां रखी गई हैं। यह सन्ध्यापाठ ज्ञान, ध्यान और योगयुक्ति को बतानेवाला होने के कारण मुमुक्षुमात्र को और विशेष कर कबीर-पन्थ की संपूर्ण शाखाओं को उपयोगी है। इसलिये सायंकाल इसका पाठ अवश्य होना चाहिये।

अन्त में यह पार्थना है कि, इस सन्ध्यापाठ का पाठक्रम सब स्थानों में एक समान होना चाहिये। सर्वत्र समान रूप से पाठ हो जाने के कारण सब स्थानों के सन्त, महन्त और सेवक संमिलित होकर आसानी से पाठ कर सकते हैं। और पाठ की भी एक धारा बनी रहती है।

सन्ध्या की महिमा और आवश्यकता

सन्धिकाल को सन्ध्या कहते हैं। यद्यपि प्रातः मध्याह्न और सायं; इस प्रकार संध्याकाल तीन माने गये हैं; तथापि सायं-सन्ध्या में सन्ध्या शब्द के अधिक प्रसिद्ध होने से सन्ध्या पाठ लिखा जाता है। सन्ध्या समय केवल

भजनस्मरण और स्तुतिपाठ के लिये ही है। अत : सब कामों को छोड़कर उस समय सद्गुरु की स्तुति-प्रार्थना-वंदना अवश्य करना चाहिये। इस विषय में यह कैसा अच्छा शिक्षावचन है

"शतं विहाय भोक्तव्यं, सहस्रं स्नानमाचरेत्।
लक्षं विहाय दातव्यं, कोटिं त्यक्त्वा हरिं भजेत् ।।"

सौ कामों को छोड़कर भोजन और हजार कामों को छोड़कर स्नान करना चाहिये और कोटि-कोटि अत्यावश्यक कार्यों को छोड़कर सद्गुरु का भजनस्मरण करना चाहिये।

"ऋषयो दीर्घसंध्यात्वाद्, दीर्घमायुमवाप्नुयु:।
प्रज्ञां यशश्च कीर्तिञ्च, ब्रह्म-वर्चसमेव च ।।"

सन्ध्यावंदन और भजन-ध्यान में जितना ही अधिक समय लगाया जाता है उतना ही लाभ होता है। अधिक समय तक संन्ध्या करने ही के कारण ऋषि और महर्षि दीर्घजीवी होते थे और उनको इससे ही प्रज्ञा, यश, कीर्ति तथा ब्रह्मतेज की प्राप्ति होती थी। इसलिये सन्ध्यावन्दन में अधिक समय लगाना चाहिये। 'अहरहः सन्ध्यामुपासीत' इसके अनुसार प्रात : सन्ध्या और सायंसन्ध्या प्रतिदिन करना चाहिये। इन दोनों के फलों को मनु भगवान् इस प्रकार वर्णन करते हैं :-

"पूर्वां सन्ध्यां जपांस्तिष्ठेन्नैशमेनी व्यपोहति।
पश्चिमां तु समासीनो मलं हन्ति दिवाकृतम् ।।"

प्रात : सन्ध्यासमय खड़े होकर जप करने वाला रात में किये हुये पातकों को नष्ट कर देता है। और सायंसन्ध्या में बैठकर जप करने वाला दिन के पापों को दूर करता है। जो दोनों सन्ध्याओं में से एक भी नहीं करता है उसे पतित समझना चाहिये।

"न तिष्ठति तु य : पूर्वां, नोपास्ते यश्चपश्चिमाम्।
स शूद्रवद् बहिष्कार्यः, सर्वस्माद् द्विजकर्मण : ।।" (मनु)

जो प्रात :सन्ध्या और सायंसन्ध्या को नहीं करता है उसे सम्पूर्ण द्विजकर्मों से शूद्र की तरह अलग कर देना चाहिये। और जो साधु ध्यान, भजन और सन्ध्यापाठ आदि का साधु के कर्मों से रहित हों उन्हें भी सतर्क कर देना चाहिये, जिससे उनकी भी इसमें अवश्य प्रवृत्ति हो जावे।

"सन्ध्या पाठ " सरला-टीका से साभार

सन्ध्या सुमिरण आरती

अहिन्दी-भाषी भक्तों एवं साधुओं की सुविधा को ध्यान में रखकर यह मूल सन्ध्या- पाठ इस पत्रिका में दी जा रही है। भक्तजन इसकी बराबर मांग भी करते हैं। षष्ठशताधिक वर्षों से यह पाठ कबीर-पंथ में प्रचलित है, तथा लाखों सद्गुरु कबीर साहेब के अनुयायी इसका प्रतिदिन पाठकर आत्मसुख प्राप्त करते हैं। इसका पाठ जहाँ जीवन में आयी बाधाओं से मुक्ति दिलाता है वहीं इसमें दी गई गूढ-ज्ञान को आत्मसात् कर कार्यरुप में परिणत करने से जीवन का चरमोत्कर्ष प्राप्त होता है।

सद्गुरु कबीर साहेब के चारों युगों के नाम तथा धनी धर्मदास साहेब के वर्तमान तक के वंशों के '*नाम-सुमिरण*' से इसका मंगलाचरण किया गया है। '*गुरु वन्दना*' में सद्गुरु के गुणों का ध्यान कर वन्दना की गई है। '*गौड़ी*', में जिस प्रकार मृग ; शब्द के लिये, सती; सत्त के लिये, पपीहा पक्षी; स्वाति बून्द के लिये, शूरवीर; वीरता के लिये प्राणों की आहुती दे देते हैं, उसी प्रकार शिष्य को गुरु चरणों का सदा ध्यान धरने की शिक्षा है। '*सन्ध्या-साखी*' में ' सोऽ हं' को श्वास- प्रश्वास में जोड़ कर जप करने की विधि बताई गई है। '*आरती*' सद्गुरु हमें पूर्णब्रह्म की पहिचान एवं सुख सागर में स्नान करने की प्रेरणा देते हैं। '*ज्ञान स्तोत्र*' में चेतन सत्ता किस प्रकार सर्वत्र परिव्याप्त है। इसका सुन्दर वर्णन है। '*विज्ञान स्तोत्र*' में आत्म-तत्त्व में लीन विज्ञानियों के लक्षण बताये गये हैं। इसमें शुद्ध चेतन के स्वरूप तथा चेतन अचेतन को भी दर्शाया गया है। बाद में शुद्ध चेतन के चिद्विलाश का वर्णन है। '*साखी*' में चारों युगों में धर्मदास साहेब को शिक्षा देने एवं गुरु-साधु के रुप का विवेचन है। '*दयासागर*' में विनती करने पर धर्मदास जी को सद्गुरु कबीर साहेब दया कर पञ्चकुण्ड स्नान एवं छठवें अकह-कुण्ठ स्नान की विधि बताते हैं।

'*चेतावनी*' में बहुत ही सुन्दर ढंग से आसन विधि - मन्त्रविधि, जपविधि-सहजयोग एवं हठयोग का वर्णन है। धर्मराय अपने दूतों को 'कबीर' मंत्र का उच्चारण करने वालों को तंग न करने का आदेश देते हैं। '*ज्ञान गुदड़ी*' नाम के अनुसार ही इसमें ज्ञान प्राप्ति के हीरे-लाल-जवाहिरात भरे हैं। संसार-रचना में पांच-तत्त्व, पचीस-प्रकृति का योग जिसे सुमति साबुन से शुद्ध करने की विधि है। घट की चौका को प्रकाशित करने की शिक्षा है। पूरे कबीर पंथ में इस '*ज्ञान-गुदड़ी*', का महत्त्वपूर्ण स्थान है। '*साखी*' में सद्गुरु अपने आज्ञाकारी शिष्यों को सत्यलोक ले जाने का वचन देते हैं। '*वन्दना-साखी*' में शिष्य के द्वारा बहुत प्रकार से गुरु की स्तुति की गई है। '*विनय-छन्द*' एवं बाद के '*साखी*' में बहुत ही करुण भाव से सद्गुरु की धनी-धर्मदास जी प्रार्थना कर रहे हैं। '*अर्जिनामा*' इस प्रकरण में सद्गुरु कबीर साहेब के द्वारा किये गये बहुत से चमत्कारिक लीलाओं का उद्धरण देते हुये धर्मदास साहेब की विनय-स्तुति का वर्णन है। '*अष्टक*' इन तीन अष्टकों में रतना बाई ने सद्गुरु के मगहर में हुये अन्तर्ध्यान तथा सद्गुरु के स्वरुप एवं गुणों का वर्णन और श्रद्धा पूर्वक उनकी स्तुति की है। '*घनाक्षरी छन्द*' इसमें सर्वसंशय के निवारक सद्गुरु के 'सत्यपुरुष' रुप का वर्णन है।'*आरती*' इसमें तीन प्रमुख सर्व प्रचलित आरतियां हैं। '*ध्यानम्*' इसमें परम्परा से प्रचलित अशुद्ध दो श्लोकों को पूज्यपाद सत्यलोकवासी पंथ श्री हजूर प्रकाशमणिनाम साहेब (खरसिया) द्वारा शुद्ध किये गये श्लोक दिये गये हैं। (कई संस्कृत विद्वानों द्वारा टोके जाने पर उन्होंने इन श्लोकों को शुद्ध कर 'ब्रह्मनिरुपणम्' ग्रन्थ में प्रकाशित करने की अनुमति दी थी। उनका प्रसाद रुप में अपना कर यहाँ प्रस्तुत हैं)। गुरु वन्दना की '*साखी*' तथा अन्त में प्रातः, मध्यान्ह, सायं तथा अर्धरात्रि में उपयोग की जाने वाली '*आदि गायत्री*' है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह "*सन्ध्या पाठ*' सभी संत महंत-भक्तों के लिये उपयोगी सिद्ध होगा।

|| saṇdhyā pāṭha ||

|| sumiraṇa ||

satyanāma, satyasukrita, ādiadalī, ajara, aciṇtya puruṣa, munīṇdra, karuṇāmaya,
kabīra suratiyogasaṇtāyana,dhanī dharmadāsa, curāmaṇināma, sudarśana
nāma, kulapatināma, prabodhaguru bālāpīra, kamalanāma,
amolanāma, suratisanehīnāma, hakkanāma, pākanāma,
pragaṭnāma,dhīrajanāma, ugranāma, dayānāma,
graṇdhamaṇināma, prakāśamaṇināma,
udītamaṇi nāma, mukuṇdamaṇināma
kī dayā | cāra gurubaṇśa byālīsa
kī dayā | sarva saṇta
mahaṇtana kī
dayā |

sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī

|| guru vaṇdanā sākhī ||

guru ko kije baṇdagī, koṭi koṭi praṇāma |
kīṭa na jāne bhriṇga ko, kara guru āpa samāna ||
guru mūrati gati caṇdramā, sevaka nayana cakora |
palaka palaka nirakhata rahun, guru mūrati kī ora ||
guru base banārasī, śiṣya samūṇdara tīra |
bisarāye bisare nahīn, jo guṇa hoya śarīra ||
lakṣa kosa men guru basai, surati diyo paṭhāya |
śabda turī asavāra huai, pala āvai china jāya ||

|| gauḍī ||

lagana kaṭhina mere bhāī , guruse lagana kaṭhina mere bhāī |
lagana lage binu kāja na sari hai, jīva paralayatara jāyī ||
miragā nāda śabda kā bhedī, śabda sunana ko jāyī |
soyi śabda suni prāṇa deta hai, taniko na manameṇ ḍarāyī ||
taji dhana dhāma satī hoya nikasī, satta karana ko jāyī |
pāvaka dekhi ḍare nahiṇ manameṇ, kūdi pare sara mānhīn ||
svāti buṇda liye raṭata papiharā, piyā piyā raṭa lāyī |
pyāse prāṇa jāya kyon na abahī, aura nīra nahin bhāī ||
dou dala āni jure jaba saṇmukha, sūrā leta laḍāyī |
ṭūka ṭūka hoya gire dharanī pai, kheta chāṇḍa nahin jāyī ||
chāṇḍo apane tanakī āśā , nirabhaya hoya guna gāyī |
kahaiṇ kabira aisī lou lāvo, sahaja mile guru āyī ||

|| saṇdhyā sākhī ||

nirvikāra nirbhaya tunhi, aura sakala bhaya mānhi |
saba para terī sāhebī, tuma para sāhiba nānhi ||

saṇdhyā sumiraṇa ārati, bhajana bharose dāsa |
manasā vācā karmaṇā, jabalaga ghaṭamen śvāsa ||

śvāsa śvāsa men nāma le, vrithā śvāsa mati khoya |
nā jāne yaha śvāsa ko, āvana hoya na hoya ||

śvāsā kī kara sumiraṇī , kara ajapā ko jāpa |
parama tattva kā dhyāna dhara, sohaṃ āpo āpa ||

sohaṃ poyā pavana men, bāṇdho surata sumera |
brahm gāṇṭha hridaya dharo, isavidhi mālā phera ||

mālā śvāsocchavāsakī, phereṇge koyī dāsa |
caurāsī bharame nahīn, kaṭe kāla kī phāṇsa ||

sāṇjha pare dina āthave, cakavī dīnahā roya |
cala cakavā tahan jāiye, jahān raina divasa nahin hoya ||

raina ki bicurī cākavī, āni milī parabhāta |
jo jana bicure nāmason, divasa mile nahin rāta ||

sataguru mohi nivājiyā, dīṇhā aṃmara mūla |
śītala śabda kabīra kā, haṇsā kare kilola ||

haṇsā tuma jani ḍarapiho, kara merī paratīta |
amara loka panhucāyahon, calo so bhavajalajīta ||

bhavajala men bahu kāga haiṇ, koyi koyi haṇsa hamāra |
kahanhi kabīra dharmadāsa son, kheva utāro pāra ||

vinavata hūn kara jorike, sunu guru kripānidhāna |
saṇtana ko sukha dījiye, dayā garībī gyāna ||

dayā garībī baṇdagī, samatā śila karāra |
itane lakṣaṇa sādhūke, kahanhin kabīra vicāra ||

dhanī ūpara dharmadāsa hai, satya nāma kī ṭeka |
rahiṭā puruṣa kabīra hai, calatā hai saba bhekha ||

bheṣa barābara ho rahe, bheda barābara nānhin |
taula barābara ghūṇghacī, mola barābara nānhin ||

kevala nāma kevala guru, bālā pīra kabīra |
ṭhāḍhe haṇsa binatī karen, darśana deho kabīra ||

ānaṇda maṇgala āratī, sadguru satya kabīra |
jamake phaṇdā kāṭike, haṇsa lagāve tīra ||

sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī

|| āratī ||

gyāna āratī amrita bāṇī, pūraṇa brahma lehu pahicānī |
jāke hukuma pavana au pānī, vākī gati koyī birale jānī ||

tridevā mili joti bakhānī, nirākāra kī akatha kahānī |
yahī āśā saba hila mila ṭhānī, bharma bharma bhaṭke nara prāṇī ||

driṣṭi binā duniyā baurānī,sāheba chāṇḍī jama hātha bikānī |
sakala srīṣṭī hamahī utapānī, śīla saṇtoṣa dayā kī khānī ||

sukha sāgara men karo snānā, nirbhaya pāvo pada nirvānā |
kahaiṇ kabīra soyi saṇta sujānā, jina jina śabda hamāro mānā ||

|| gyāṇa stotra || hymn of knowledge

kabīra : – sat sat ke nāma se, satya sāgara bharā,
satya kā nāma tihun loka chājā |
saṇta jana āratī karen, prema tārī dharen,
ḍhola nisāna mrīdaṇga bājā ||

bhakti sāncī kiyā nāma niscaya liyā, śūnya ke śīkhara bramhāṇda gājā |
satya kabīra sarvagya sāheba mile, bhajo satyanāma kyā raṇka rājā ||
hama dīna dunī daraveśā, hama kiyā sakala paraveśā |
hama duvā salāmata lekhā, hama śabda svarupī pekhā ||
hama ruṇda muṇda men phīrā, hama phākā, phikara phakīrā |
hama rame kauna kī nāla , hama cale kauna kī cāla ||
hama sarvaṇgī sahaje rame, hamārā vāra na pāra |
vāra bhī hamahīn pāra bhī hamahīn, nānā dariyā tīra ||
sakala nīraṇtara hama rame, hama gahare gambhīra |
khālīka khalaka khalaka ke māhīn, youn guru kahanhīn kabīra ||
satyanāma kī āratī, nīrmala bhayā śarīra |
dharmadāsa loke gaye, guru bahiyān mīle kabīra ||
dharmadāsa loke gaye, choḍī sakala saṇsāra |
haṇsana pāra utārahīn, guru dharmadāsa parivāra ||
satya sukrita laulīna hai, gyāna dhyāṇa men sṭhīra |
ajāvana vaha puruṣa hai, so gahi lāgo tīra ||
satta satta kā bhayā prakāśā, jarā maraṇa kī chūtī āśā |
śabda na biṇase biṇase dehī, kahanhīn kabīra hama śabda sanehī ||
pānca tattva tīna guna pele, ramitā rahe śabda so khele |
kahanhin kabīra so haṇsa hamārā, bahurī na dekhe jamakā dvārā ||
rahu re kāla parādhiyā, durbala tora śarīra |
sata sukrita kī nāva hai, kheve satya kabīra ||
bhava bhanjana dukha pariharana , aṃmara karana śarīra |
ādi yugādi āpa ho, guru cāron yuga kabīra ||

sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī

|| vigyāna stotra || hymn of the great knowledge

ati laulīna ciṇhanta gyānī |
śabda svarupī suna ākāśa bānī, bīnā deha sāheba nīrālaṃba jānī ||
jāne janāve kahāve na devā, aisā tattva pūje pujāve, lagāve na sevā |
sadā dhyāna dhārī akhaṇdo nīrāsā, sudhāsīṇdhu pīve na jāve piyāsā ||
parama dhāma dhīrā udāsī akelā, laulīna jogī guru gyāna melā |
milaṇtā calaṇtā rahaṇtā apārī, aisā drisṭī dekho anaṇto vicārī ||
sadā ceta cetaṇta citavaṇta sūrā, aisā khyāla khelaṇta būjhaṇta pūrā |
gyāno na dhyāno na māno na thāno, nahīn caṇdra tārā na ūge na bhāno ||
āge na pīche na madhye na koyī, jyon ka jalā brahma tyon tattva soyī |
ḍālo na mūlo na vrikṣo na chāya, jīvo na śivo na kālo na kāyā ||

dr̥iṣṭi na muṣṭi na devī na devā, jāpo na thāpo na pūjā na sevā |
nahīn pavana pānī na caṇdre na sūrā, akhaṇdita brahma soyī sidha pūrā ||
hama nāhīn tuma nāhīn baṇdho na bhāī, nirādhāra ādhāra raṇko na rāī |
gāve na dhāve na helī na helā, narī na puruṣo na celī na celā ||
nahīn peṭa priṣṭī na pānvo na māthā, jīvo na śivo na nātho anāthā |
śeṣo maheśo ganeśo na gvālaṃ, gopī na gvālaṃ na kaṇso na kālaṃ ||
āse na pāse na dāse na devā, āve na jāve lagāve na sevā |
nahīn vāra pāre na madhye na tīrā, jyon kā tyon tattva gahare gaṃbhīrā ||
jaṇtre na maṇtre na darde na dhokā, narake na svarge na saṇśaya na śokā |
sete na pīte na sabje na lālaṃ, gore na sānvare na vrihdhe na bālaṃ ||
vedā na bhedā na khedā na koyī, sadā surati sohaṃ eke na doyī |
jāne janāve janāve so śura, ūre na pūre na niyare na dūrā ||
nāde na biṇde na jiṇde na jīvā, nīraṇtara brahma jahan śakti na śivā |
nahīn joga jogī na bhogī na bhuktā, saccidānaṇda sāheba baṇdhe na muktā ||
khele khilāve khelāve au khele, cete cītāve cetāve au cete |
dekhe dīkhāve dekhāve au dekhe, eke aneke aneke so eke ||
citaguṇa cittavilāsa, dāsa son aṇtara nāhin |
ādi aṇta au madhya, sadā so brahma gosānyī ||
agaha gahana men nāhin ,gahanī gahiye so kaisā |
sohaṃ śabda samāna, ādi brahma jaise ka taisā ||
kahain kabīra hama khele sahaja subhāva, akaha adola abola |
niraṇtara brahma, surati sohaṃ soyī ||
khele khela khilāvata hamahin, jahān ke tahān rasātala sabahin |
tā sabahi men hai eka samatā, tāmen āni basā eka ramatā ||
vā ramatā ko lakhai ju koyī, tāko āvāgavana na hoyī |
ohaṃ sohaṃ sohaṃ soyī, ohaṃ kīlaka sohaṃ bālā ||
sohaṃ sohaṃ bole risālā ||

|| sākhī ||

kilaka kamata kamoda kaṇkavata, ye cāron juga pīra |
dharmadāsa ko śabda sunayo, sataguru satya kabīra ||
kabīra mile dharmadāsa ko, likha paravānā diṇha |
ādi aṇta ke vārtā, yehi loka ke ciṇha ||
guru mukha bāni ucare, śiṣya sānca kari māna |
yahi vidhi phaṇdā chuṭahi, aura yukti nahin āna ||
sādhu sādhu mukha se kahen, pāpa bhasma ho jāya ||
āpa kabīra guru kahata haiṇ, sādhū sadā sahāya ||
sadhu svarūpī guru haiṇ, guru svarūpī āpa |
manasā vācā karmaṇā, kahaiṇ kabīra asa thāpa ||
bājā nāda bhayā paratīta, sataguru āye bhavajala jīta |
bājā bāje sāhaba ke rāja, mārā kūṭā dagā bāja ||
hājira ko hajūra gāphila ko dūra, hiṇdū kā guru musalamāna kā pīra |
sāta dvīpa nau khaṇḍa men, sohaṃ satya kabīra ||

sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī

|| dayāsāgara || the ocean of mercy - bath in the five ponds

guru dayā sāgara gyāna āgara, śabda rupī sadguram |
tāsu caraṇa saroja vaṇdaun, sukhadāyaka sukhasāgaram ||
yogajīta ajīta aṃmara, bhāṣte sata sukritam |
dayāpāla dayāla svāmī, gyāna dātā susthiram ||
kṣamā śīla saṇtoṣa samitā, ānaṇda rupī hiradayam |
sahaja bhāva viveka susthira, nirmāyā nihasaṇśayam ||
nirmohī nirvaira nirbhaya, akatha kathitā avigatam |
upakāra au upadeśa dātā, mukti māraga sadgurum ||
dāsa bhāva kī prīti binatī, bhakti karana karāvanam |
caurāsi baṇdhana karma khaṇḍana, baṇdichora kahāvanam ||
triguṇa rahitā satya vaktā, satyaloka nivāsitam |
satyapuruṣa jahān satya sāheba, tahān āpa virājitam ||
yugana yugana satyapuruṣa āgyā, jīvana kāraṇa pagudharam |
dīna līna acīṇta hoya ke, jagata men ḍolata phiram ||
karuṇāmaya kabīra kevala, sukhadāyaka sarva lāyakam |
jama bhayaṇkara māna mardana, dukhita jīva sahāyakam ||
dharmadāsa kara jori binaven, dayā karo mana vaśakaram |
karun sevā gurubhatki avicala, niśadina ārādhon sumiraṇam ||
sadguru kī adhika mahimā, gyāna kuṇḍa nahāiye |
bhramita mana jaba hota susthira, bahuri na bhavajala āiye ||
sādhu saṇta kī adhika mahimā, rahani kuṇḍa nahāiye |
kāma krodha vikāra parihari, bahuri na bhavajala āiye ||
dāsātana kī adhika mahimā, sevā kuṇḍa nahāiye |
prema bhakti pativrata driḍha kari, bahuri na bhavajala āiye ||
yogī puruṣa kī adhika mahimā, yukti kuṇḍa nahāiye |
caṇdra sūrya mana gagana thira kari, bahuri na bhavajala āiye ||
śrotā vaktā kī adhika mahimā, vicāra kuṇḍa nahāiye |
sāra śabda nivera līje, bahuri na bhavajala āiye ||
guru sādhu saṇta samāja madhye, bhakti mukti driḍhāiye |
surati kari satyaloka pahunce, bahuri na bhavajala āiye ||
dharmadāsa prakāśa sadguru, akaha kuṇḍa nahāiye |
sakala kilamiṣa dhoya nirmala, bahuri na bhavajala āiye ||
sāheba kabīra prakāśa sadguru, bhali sumati driḍhāiye |
sāra men tattva sāra daraśe, soyī akaha kahāiye ||
dharmadāsa tattva khoja dekho, tattva men nihatattva hai |
kahaiṇ kabīra nihatattva darase, āvāgavana nivāriye ||

sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī

|| cetāvanī ||

kabīra jaṃmana jāya pukāriyā, dharmarāya darabāra |
haṇsa mavāsī hoya rahā ,lage na phānsa hamāra ||
hamarī śaṇkā nā kare, tuṃharī dhare na dhīra |
sataguru ke bala gājahīn, kahaiṇ kabīra kabīra ||
kabīra kahe vākon jāne de, merī dasī na jāya |
khevaṭiyā ke nāva para, caḍhe ghanere āya ||
bājā bāje rahita kā, parā nagara men śora |
sataguru khasama kabīra hain , (mohi) najara na āve aura ||
satta kā śabda suna bhāī, phakīrī adala bādaśāhī |
sādhu baṇdagī dīdāra, sahaje utare sāyara pāra ||
sohaṃ śabda son kara prīta, anubhava akhaṇḍa ghara ko jīta |
tana men khabara kara bhāī, jāmen nāma rośanāī ||
surati nagara bastī khūba, behada ulaṭa caḍha mahabūba |
surati nagara men kara sela, jāmen ātmā ko mahala ||
amari mūla saṇdhi milāva, tāpara rākho bānyā pānva |
dahinā madhya men dharanā, āsana amara yon karanā ||
dvādaśa pavana bhara pīje, śaśi ghara ulaṭa chaḍha līje |
tana mana vāranā kīje, ulaṭi nija nāma rasa pīje ||
tana mana sahita rākho śvāsa, isavidhi karo behada vāsa |
donon naina ke kara bāna, bhaunrā ulaṭi kaso kamāna ||
parvata cheke dariyā jāna, kara le trikuṭi snāna |
sahaje parase pada nirbāna, terā mite āvājāna ||
jāme gaiba kā bājāra, saravara dou dīse pāra |
tā bica khaḍe kudaratī jhāḍa, śobhā koṭī agama apāra ||
lāge nava lakha tārā phūla, kiranen koṭi jaḍiyā mūla |
tāko dekhanā mata bhūla, ramatā rāma āpa rasūla ||
māyā bharma kī kāncī, dekho aṇdara kī sāncī |
barase nīra binā motī, caṇdā sūraja kī jotī ||
jhalake jhilamilī nārī, tābica alakha hai kyārī |
māno prema kī jhārī, khula gaī agama kinvārī ||
beḍā bharma kā khoyā, dīpaka nāma kā joyā |
yogī yukti se jīve, pyālā prema kā pīve ||
maulā pīva ko dīje, tana mana kurabāna kara līje |
paḍi hai prema kī phānsī, manuvā gagana kā vāsī ||
bāje binā taṇtī tūra, sahaje uge paścima sūra |
bhanvarā sugaṇdha kā pyāsā, kiyā hai kamala men vāsā ||
ramitā haṇsa hai rājā, sahaje palaka āvā jā |
suṇdara śyāma ghana āyā, bādala gagana men chayā ||
amrita buṇda jhaḍi lāyā, dekha doya naina lalacāyā |
ajaba dīdāra ko pāyā, dariyā sahaja men nahāyā ||
dariyā ulaṭe umage nīra, tā bica cale caunsaṭha chīra |
haṇsā āna baiṭhe tīra , sahaje cuge muktā hīra ||
milā hai prema kā pyārā, nahīn hai naina so nyārā |
jīvata mritaka na vyāpe kāla, jo trikuṭi se palaka na ṭāla ||

palakā pīva so lāgā, dhokhā dila kā bhāgā |
citāvanī cītta vilāsa, jaba lagi rahe piṇjara śvāsa ||
sohaṃ śabda ajapā jāpa, jahān kabīra sāhiba āpa hi āpa ||

|| sākhī ||

citāvanī cita lāgī rahe, yaha gati lakhe na koya |
agama paṇtha ke mahala men, anahada bānī hoya ||
nāma naina men rami rahā, jāne biralā koya |
jāko sataguru mīliyā, tāko mālūma hoya ||
jhaṇḍā ropā gaiba kā, doya parvata ke saṇdha |
sādhu pichāne śabda ko, driṣṭi kamala kara baṇdha ||
jhalake joti jhilamilī, bina bātī bina tela |
cahun diśa sūraja ūgiyā, aisā adbhuta khela ||
jāgrita rupī rahita hain, sata mata gahara gaṃbhīra |
ajara nāma binase nahīn, sohaṃ satya kabīra ||

sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī

|| gyāna gudaḍī ||

dharmadāsa binave kara jorī, sāheba suniye binatī morī |
kāyā gudaḍī kaho saṇdeśā, jāse jiva kā miṭe aṇdeśā ||
alakha puruṣa jaba kiyā vicārā, lakha caurāsi dhāgā ḍārā |
pānca tattva kī gudaḍī bīnī, tīna gunanase ṭhāḍhī kīnī ||
tāmen jīva brahma au māyā, samratha aisā khela banāyā |
jīvana pānca pacīson lāge, kāma krodha moha mada pāge ||
kāyā gudaḍī kā vistārā, dekho saṇto agama siṇgārā |
cāṇda sūraja do pebaṇda lāge, guru pratāpa se sovata jāge ||
śabda kī suī surati kā ḍorā, gyāna kī ṭobhana sirajana jorā |
aba gudaḍi kī kara huśiyārī, dāga na lāge dekha vicārī ||
sumati kā sābuna sirajana dhoī, kumati maila ko ḍāro khoī |
jina gudaḍī kā kiyā vicārā, so jana bhenṭe sirajana hārā ||
dhīraja dhunī dhyāna kara āsana, satakī kaupīna sahaja siṇghāsana |
yukti kamaṇdala karagahi līṇhā, prema phāvari murśida cīṇhā ||
selī śīla viveka kī mālā, dayā kī ṭopī tana dharma śālā |
mahara mataṇgā mata baiśākhī, mrigachālā manahi ko rākhī ||
niścaya dhotī pavana janeū, ajapā jape so jāne bheū |
rahe niraṇtara sataguru dāyā, sādhu saṇgati kari saba kachu pāyā ||
lau kī lakuṭī hridayā jhorī, kṣamā kharāūn pahira bahorī |
mukti mekhalā sukrita sumaraṇī, prema piyālā pīvai maunī ||
udāsa kūbarī kalaha nivārī, mamatā kutti ko lalakārī |
yukti jaṇjīra bāndha jaba līṇhā, agama agocara khirakī cīṇhā ||
vairāga tyāga vigyāna nidhānā, tattva tilaka dīṇhā niravānā |
gurugama cakamaka manasā tūlā, brahma agni pragaṭa kara mūlā ||
saṇśaya śoka sakala brahma jārā, pānca pacīson pragaṭahin mārā |
dila kā darpaṇa duvidhā khoī, so bairāgī pakkā hoī ||

śūṇya mahala men pheri deī, amrita rasa kī bhikṣa leī |
duhkha sukha melā jagakā bhāū, triveṇi ke ghāṭa nahāū ||
tana mana śodha bhayā jaba gyānā, taba lakhi pāve pada nirvānā |
aṣṭa kamala dala cakra sūjhe, yogī āpa āpa men būjhe ||
iṇgalā piṇgalā ke ghara jāī, sukhamani nārī rahe ṭhaharāī |
ohaṃ sohaṃ tattva vicārā, baṇkanāla men kiya saṃbhārā ||
manako māra gagana caḍhi jāī, māna sarovara paiṭhi nahāī |
anahada nāda nāma kī pujā, brahma vairāga deva nahin dūjā ||
chūṭi gaye kaśamala karmaja lekhā, yaha nainana sāhaba ko dekhā |
ahaṇkāra abhimāna biḍārā, ghata kā caukā kara ujiyārā ||
cita kara caṇdana manasā phūlā, hitakara saṃpuṭa kari le mūlā |
śradhā canvara prīti kara dhūpā, nautama nāma sāheba ko rupā |
gudaḍī pahire āpa alekhā, jina yaha pragaṭa calāyo bhekhā ||
sāheba kabīra bakasa jaba dīṇhā, sura nara muni saba gudaḍī līṇhā |
gyāna gudaḍi paḍhe prabhātā, jaṇma jaṇma ke pātaka jātā ||
gyāna gudaḍī paḍhe madhyānā, so lakhi pāvai pada nirabānā |
saṇjhā sumiraṇa jo nara karahīn, jarā maraṇa bhava sāgara tarahīn ||
kahaiṇ kabīra suno dharmadāsā, gyāna gudaḍī karo prakāśā |

|| sākhī ||

māla ṭopī sumaraṇī, sataguru diyā bakśīśa |
pala pala guru ko baṇdagī, caraṇa namāvūn śīśa ||
bhava bhaṇjana duhkha pariharaṇa , aṃmara karana śarira |
ādi yugādi āpa ho, guru cāron yuga kabbīra ||
baṇdichora kahāiyā, balakha śahara maṇjhāra |
chuṭe baṇdhana bhekha kā, dhana dhana kahai saṇsāra ||
maiṇ kabīra bicalūn nahīn, śabda mora samratha |
tāko loka paṭhāi hūn, jo caḍhe śabda ko raṭha ||
sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī

|| vaṇdanā sākhī ||

vāron tana mana dhana sabai, pada parakhāvana hāra |
yuga anaṇta jo paci mare, bina guru nahin nistāra ||
saravara taruvara saṇtajana, cauthā barase meha |
paramāratha ke kāraṇe, cāron dhārī deha ||
jivana yauvana rājamada, avicala rahe na koya |
jo dina jāya satsaṇga men, jīvana kā phala soya ||
saṇdhyā sumirana kījiye, surati nirati eka tāra |
karo arpaṇa guru carana men, nāśe vighna apāra ||
avaguna mere bāpajī, bakaso garība nivāja |
maiṇ to putra kuputra hūn, tūnhi pitā ko lāja ||
avaguna kiyā to bahuta kiyā, karata na mānī hāra |
bhāve bakso bāpajī, bhāve gardana māra ||
maiṇ aparādhi jaṇmakā, nakha śikha bharā vikāra |
tuma dātā duhkha bhaṇjanā, merī karo ubāra ||

samratha ḍorī khainca ke , ratha ko do pahuncāya |
māraga men na chānḍiye, (sāheba) bānā birada lajāya ||
sataguru hamāre eka haiṇ, ātama ke ādhāra |
jo tuma choḍo hātha so, (to) kauna nibhāvanahāra ||
sadguru hamāre eka haiṇ, tuma laga meri daura |
jaise kāga jahāja para, sūjhe aura na ṭhoura ||
koṭika caṇḍā ūgahīn, sūraja koṭi hajāra |
timira to nāśe nahīn, guru bina ghora aṇdhāra ||
rama krisṇa so ko baḍa, unahūn to guru kīṇha |
tīna loka ke ve dhanī, guru āge ādhīna ||
mere guru ko do bhujā, goviṇda ko bhuja cāra |
goviṇda so kachu nā sare, guru utāre pāra ||
sāheba ko sevaka ghane, hamako sāheba eka |
jyon hariyala kī lākaḍi, sāheba nibhāve ṭeka ||
hama pakṣi tuma kamaladala, sadā raho bharapūra |
hama para kripā na chānḍiye,(sāheba) kyā niyare kyā dūra ||
bhakti bhakta bhagavaṇta guru, catura nāma vapu eka |
inake pada vaṇdana kiye, nāśe vighna aneka ||

sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī

|| vinaya chaṇda ||

guru dukhita tuma bina raṭahun dvāre, pragaṭa darśana dījiye ||
guru svāmiyā sunu binatī morī, bali jāūn bilaṃba na kījiye |
guru naina bhari bhari rahata hero, nimiṣa neha na chānḍiye ||
guru bānha dīje baṇdichora so, abakī baṇda choḍāiye |
vividha vidhi tana bhayeu vyākula, binu dekhe aba nā rahon ||
tapata tanamen uṭhata jvālā, kaṭhina dukha kaise sahaun |
guṇa avaguṇa aparādha kṣamā karo, aba na patita visāriye ||
yaha binatī dharmadāsa janakī, sata puruṣa aba māniye ||

|| sākhī ||

namon namon gurudeva ko , namon kabīra kripāla |
namon saṇta śaraṇāgati, sakala pāpa hoya chāra ||
baṇdichora kripāla prabhu, vighna vināśaka nāma |
aśaraṇa śaraṇa baṇdaun caraṇa, saba vidhi maṇgala dhāma ||
dharmadāsa vinaya kari, vihasi gurupada paṇkaja gahe |
he prabho hohu dayāla, dāsa cita ati dahe ||
ādi nāma svarupa śobhā, pragaṭa bhāṣa sunāiye |
kāla dāruna ati bhayaṇkara, kīṭa bhriṇga banāiye ||
ādi nāma nih akṣara, akhila pati kāranam |
so pragaṭe guru rupa, to haṇsa ubāranam ||
sadguru caraṇa saroja, sujana mana dhyāvahi |
jarā maraṇa dukha nāsti, acala ghara pāvahi ||
guru baṇdichora kripālu sāheba, sakala mati ke bhupa ho |
tuma gyāna rupa akhaṇḍa puraṇa, ādi brahma svarupa ho ||

guru baṇḍichora dayāla sāheba, karahu mama udhāra ho |
maiṇ karata dāsa pukāra he guro! tāra tāraṇahāra ho ||

sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī

|| arjināmā ||

karata hūn pukāra mere tumahī ho ādhāra,
suniye begahi gohāra sāheba bāra kāhe lāye ho |
baḍe baḍe saṇkaṭa men saṇtana sahāya kīṇhon,
rākhi praṇa janako nija paija hūn baḍhāye ho |
janako dukha dukhita dekha āpa saṇtako kalāpameṭa,
dukha dahana dāna sukhasāgara dena āye ho |
setu baṇdha bāndhi be ko rāmacaṇdra vikala bhaye,
`likhī sata rekhā jala pāhana utarāye ho |
dvāpara pagū dhāre nistāre nrīpa vadhū vyāla,
viṣaya biḍāre yama phaṇda te chūḍāye ho |
pāṇḍu ke kumāra vikala yagya ke prakāra bahe,
saṇśaya kī dhāra hāra śiśa bhūmi lāye ho |
vāko yagya sāryo biḍāryo duhkha dāruṇa te,
sakala bheṣa bhūpana mili jaya jaya ucarāye ho |
kalayuga tana dhāre saba bheṣana ke kāja sāre,
prathame puruṣottama purī devala thapāye ho |
sāgara haṭāye bhrama bhaṇjana miṭāye,
pragaṭe anaṇta rupa cakita dvija bhāye ho |
balakha sidhāye chuḍāye bahu bheṣana,
driḍhāī sulatānā bhakti māraga lakhāye ho |
siṇdhū vohita bacāye dāha paṇḍā ke bujhāye,
āye nagra kāśī puravāsī guṇa gāye ho |
carcā bhaī bhārī kājī paṇdita pacihārī,
ismakuṇ phera śāha sikaṇdara samujhāye ho |
śekhatakī bāra bāra kasanī leke rahyo hāra,
kudarata kamāla suta mritaka jivāye ho |
gorakhapura magahara bāndhe doū dīna parabodhe,
bāndhogaḍha baghelā rānā khānā sacu pāye ho |
kautuka dikhāya nadī āmī, bahāye tahān,
bhāye nara nārī mana vāṇchita phala pāye ho |
jīvana ke dhanī ho sunī prabhutāke lāyaka,
jaisī jākī āśā tāko taisehī purāye ho |
baṭake bīja bovāye khojī haṭāye,
saṇśaya miṭāye jana gyāni samujhāye ho |
herata ko apanī ora kripā karo cakṣukora,
nirakhata hauṇ tuṃhārī ora kāhū nahīn dhāye ho |
haun sapūta au kapūta kouṇ lāja pitā jananīkī,
apanā prāṇa pakṣa jāni nāhīn bilagāye ho |

jāko jana vikala kala kaiso tā sāheba ko,
dāsa kī hansāī ṭhakurāī hansī jāye ho |
bandīchora nāma tero begi banda chora mero,
haun to adhīna tero kahā anero ṭhaharāye ho |
tūmhārī bala jāna ṭhāna jīvana ko dinhopāna,
suni lījai binati māna dharmani goharāye ho |
taba prakaṭe sataguru kabīra dharmani cittadhārodhīra,
tana pulakita cakṣu nīra dhāya pāya lāge ho |
nirakhi vadana vikala bole paga prakāśa,
manamukuṭa ḍole hiye umaṇga mana mudita khole ho |
paga paikaṭa gayo chuṭa guphā dvāra nipaṭa gayo ṭūṭa,
bhayo yamarāja ghara lūṭa lakhi durgūna saba jāge ho |
dvārapāla kīṇho śora sabe dhāye cahūn ora,
karatakalāpa hāyamora, putra dukhita śāhū abhāge ho |
dampati kahe kara jori putra ina mārā mora,
hamahū kasa karaba ghora putra binā anurāge ho |
taba bole sattanāma baina śāhu hridai rākhu caina,
tero suta mile ena taja kubudhi kāge ho |
sāji āratī anumāna śāhu sutako dīṇho pāna,
taba bālaka goharāna loka śobhā anurāge ho |
dharmani citta bhaye ānaṇda mile sakala kāladaṇda,
choḍeu sattanāma baṇdi cūka bakasāye māṇge ho |
dharmani dāsānudāsa sattanāma gaho viśvāsa,
satta kabīra āye prema umaṇga tana pāge ho |

sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī

|| aṣṭaka 1 ||

guru dhyāna sāra bhaja bāra bāra,
saba taja vikāra satanāma sāra so kara yārī |
jaya jaya guru pīraṃ satya kabīraṃ amara śarīraṃ avikārī,
niraguna nija mūlaṃ dhari asthūlaṃ kāṭana śūlaṃ bhavabhārī |
surati nija sohaṃ kalimala khohaṃ jana mana mohaṃ chavī bhārī,
amarapuravāsī saba sūkharāsī sadā vilāsī balihārī |
pīrana ke pīrā matike dhīrā alakha phakīrā braṃhacārī,
haṇsana hitakārī jaga pagu dhārī garva prahārī upakārī |
kaśī men āye dāsa kahāye haṇsa bacāye praṇadhārī,
rāmānanda svāmi aṇtaryāmī hai baḍa nāmī saṇsāri |
unako guru kiṇhā matībudhi līṇhā ūnahūn na cīṇhā karatārī,
brāṃhaṇa saṇyāsī kīṇhī hānsī taba avināśī pagu dhārī |
magahara asthānā kiyā payānā de paravānā jana tārī,
tahān bala bīrā tajai śarīrā kāṭana pīrā bhava bhārī |
vīrasiṇha deva rājā sunibala gājā saba dala sājā saṃhārī,
uta pīra paṭhānā ati balavāna lāya kamānā kara ḍārī |
saṇmukha niyarānā chūṭe na bānā bhai ghamasānā raṇa bhārī |

tabahī guru gyānī mana kī jānī adhara bānī uccārī,
tuma kholo paradā hai nahin muradā yudha avasthā kara ḍārī |
sunike yaha bānī acaraja mānī dekhī nīśānī śira mārī,
rovai paravīnā hama matihīnā tumahī na cīṇhā karatārī |
magahara taji vāsī kiyā prakāśā jahān dharmadāsā vrata dhārī,
tinako śiṣya kīṇhā saravasa dīṇhā dukhaharī līṇhā yama bhārī |
sata paṇtha calāye bharma miṭāye īṣṭa driḍhāye saṃbhārī,
ratnā jana tero karata nihero hama tana hero sāheba balihārī |

|| aṣṭaka 2 || (tribhaṇgī chaṇda)

sāheba guru gyānī samaratha dhyānī sakala sthānī sūsthiraṃ,
avigati bānī mūkti niśānī jaga men ānī guru kabbīraṃ |
śīśa virājīta tilaka akhaṇḍita mūkha sata sūkrīta gaṃbhiraṃ,
gyāna pracaṇḍita pakhaṇḍa khaṇiḍata sumitā maṇḍita kabbīraṃ |
veṣa risālā sumaraṇī mālā prema ūjiyālā kripā gahīraṃ,
dina dayālaṃ jana pratipālaṃ sadā kripālaṃ kabbīraṃ |
saṇkaṭa ṭarana kaṣṭa nivārana śīsa viḍārana yama dhīraṃ,
haṇsa ubārana jīva nistāraṃ bharma biḍāraṃ kabbīraṃ |
satyūga tretā dvāpara bītā ramtā tītā parapīraṃ,
kaliyūga kītā sabason jītā parama pūnītā kabbīraṃ |
kāśī choḍa ūḍīsā āye āśā gāḍe siṇdhu tīraṃ,
ṭhakura paṇḍo garva-vihaṇḍo pākhaṇḍa khaṇḍo kabbīraṃ |
puruṣa videhī avicala dehī nāma sanehi susthiraṃ,
je jana jāne bheṭe tāhī darśana dehū guru kabbīraṃ |
kabīra aṣṭaka ṭārana kaṣṭaka bhavajala naṣṭaka kara sthīraṃ,
dharmani dāsaṃ nita abhyāsaṃ prāpati tāsaṃ kabbīraṃ |

sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī

|| aṣṭaka 3 ||

maṇgalamṛūpa anūpama pūraṇa nāma kabira so āpa ūdārā,
mopara driṣṭi dayā kari herahūn, hauṇ ati bālaka dāsa tuṃhārā |
kāma apāra mahābala bhārata, dekhata kemama citta ḍerāve,
kīje kripā ura aṇtaryāmī su, saṇkaṭa son bahu jīva dukhāve |
lobha mahāmada krodha upāvata, hota adhīra bahuta citta mero,
mohamāyā mamatā rajanī vo to, vāraṃvāra raho nita ghero |
eka upāya ahai bacave aba, hohu dayāla dayā kari hero,
kahā kahun kachu āpa chipyo kahā, ho prabhu nātha anāthana kero |
mo kahan tāta tuhī pitumātu su, aura upaya nahīn kachū mohī,
jo suta mātupitā ḍhiga āvata, to vaha matu so drīṣṭi na joyī |
to puni loṭata poṭata āṇgana, leta uṭhaya dayā kari vohī,
tyauṇ gurudeva kabira kripālasu, hauṇ eka āśa śaraṇāgati tohī |
dāsa ko saṇkaṭa dekhi dayānidhi, haun karuṇā kari ātura dhāyo,
īṇdramatī jaba ṭera kiyo prabhu, jāya tahān vaha pīra miṭāyo |
bāṇdhata setu sahāya kiyo prabhu, rāmahu kera upāya batāyo,
kauna so saṇkaṭa mohi gariba ko, jo tumason nahin jāta chuḍāyo |

jāya puri puraṣottama ke prabhu, dekara daṇḍa samudra haṭāyo,
viprana ko abhimāna mahā prabhu, torana ko bahurupa dikhāyo,
ve bhaye dīna paḍe caraṇon taba, cārihun jāti so eka milāyo |
dāsa jahān jahān jo kachū ṭerata, tākahan ho tumavegi sahāyo
mo kahan kāhe visārata sāmratha, dina dayālu kabīra ūdārā,
ānaṇdarupa aciṇta gosāṇyī, so mohamāyā sabason prabhupārā |
sākṣi svarūpa anūpama śobhita, pārakharupa ākāra tuṃhārā,
hauṇ atidīna adhīna dukhī bahu, meṭahu mora adhora aṇdhārā |
yaha vara māṇgahun dehu dayā kari, aṇtaryāmī sugyāna prakāśā,
bodhasvarupa sada nīrṇaya guru, so manamen tuma hohu ujāsā |
vedapurāṇa kurāna jo gāvahīn, pārana pavahīn hohin udāsā,
jāpara mauja karo tuma sāhiba, so puni haṇsa mile tuma pāsā |
ye guru aṣṭaka pāṭha kare nara, āpa sūne aura dhyāna dhareṇge,
hoya śraddhā ati premahu pāvata, māraga cāla sucāla caleṇge |
te nara pāvahin mukti padāratha, pākhaṇda rupa vikāra tajeṇge,
hoya sukhī lahi ānaṇda ko pada, so bhavasāgara pāra lageṇge |

|| ghanākṣarī chaṇda ||

ajara akhaṇda rupa param prakāśi dekho,
sūrya se ūjāsi dekho atihī sohāyo hai |
bramha juga bhrama meṭī jhanyi saṇdhi kāla nāśī,
saṇśaya saba cūra kari dhūra so ūḍāyo hai |
vadahu pramāṇa aura bānina ke mata jete,
aurahu sidhāṇta so to sarva ko dikhāyo hai |
sarvahū ko jāne so to sarvahu son nyāro rahe,
soyī guru rupa nija pārakha lakhāyo hai |

satya nāma ko sumara ke tara gaye patita aneka |
tehi karaṇa nahin choḍiye satyanāma ki ṭeka ||

sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī

prema se boliye sadguru kabīra sāheba kī jaya ...... (3)

|| āratī 1 ||

jaya jaya satya kabīra |
satyanāma sata sukrita, satarata hatakāmī |
vigata kaleśa satadhāmī, tribhuvanapati svāmī || ṭeka ||
jayati jayati kabbīraṃ, nāśaka bhavabhīraṃ |
dhāryo manuja śarīraṃ, śiśuvara sara tīraṃ || jaya ||
kamala patra para śobhita, śobhājita kaise |
nīlācala para rājita, muktāmaṇi jaise || jaya ||
parama manohara rupaṃ, pramudita sukharāśī |
ati abhinava avināśi, kāśī puravāsī || jaya ||
haṇsa ubārana kāraṇa, pragaṭe tana dhārī |
parakha rupa vihārī, avicala avikārī || jaya ||

sāheba kabīra kī āratī, agaṇita aghahārī |
dharmadāsa balihārī, muda maṇgalakārī || jaya ||

|| āratī 2 ||

āratī garība nivāja sāheba āratī ho |
āratī dīnadayāla sāheba āratī ho ||
gyāna ādhāra viveka kī bātī, surati jyota jahān jāga || 1 ||
āratī karun sadguru sāheba ki, jahān saba saṇta samāja || 2 ||
daraśa paras gurucaraṇa śaraṇa bhayo, ṭūṭi gayo yama ke jāla || 3 ||
sāheba kabīra saṇtana ki kripāse, pūraṇa pada parakāśa || 4 ||

|| āratī 3 ||

saṇjhā ārati sumiraṇa soyī |
sumiraṇa karata mahā phala hoyi || 1 ||
pahilī ārati prema prakāśā |
karma bharma saba kīṇha vināśā || 2 ||
dūsarī ārati dilahimen devā |
yoga yuktise kara lehu sevā || 3 ||
tīsari ārati tribhuvana sūjhe |
gurugama gyana agocara būjhe || 4 ||
cauthī ārati cahun yuga pūjā |
guru sama deva avara nahīn dūjā || 5 ||
pancavī ārati pada niravānā |
kahahin kabīra haṇsā loka samānā || 6 ||

|| dhyānaṃ ||

dhyāyetsadguruśubhrarupamamalaṃ śvetāmbaraih śobhitam |
bhāle hyurdhvaviśobhamānatilakaṃ bhavyānanaṃ suṇdaram ||
mālāśelivirājamānahridayaṃ kaṇjāyata prekṣaṇam |
bhaktānāṃ varadaṃ tritāpaśamanaṃ padmāsanenāsthitam || 1 ||
śāṇtākāramaśeṣsadguṇayutaṃ caṇdrāvadātaprabham |
lokātītamahodayaṃ sukhakaraṃ gyānaikagamyaṃ prabhum ||
dhyānenākhilapāpatāpaharaṇaṃ prāgaih samīḍyaṃ sadā |
vaṇdehaṃ karuṇākaraṃ guruvaraṃ kabbīramānaṇdadam || 2 ||
dhyāna mūlaṃ guromūrtih, pūjā mūlaṃ guroh padam |
maṇtra mūlaṃ gurorvākyaṃ, mokṣa mūlaṃ guroh kripā ||

|| sākhī ||

vaṇdaniye guru parakha ko, bāra bāra kara jora |
dayā karaṇa saṇśaya haraṇa, saṇta rupa prabhu tora ||
maṇgalamaya maṇgala karaṇa, maṇgala rupa kabīra |
dhyāna dharata nāśata sakala, karma janita bhava pīra ||
vaṇdaun sanamukha pārakhī, śisa bhenṭa dharun hātha |
vacana ucāraun baṇdagī, satya prema ke sātha ||

sāheba baṇdagī , sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī

saṇdhyā sumirana ārati , śrī guru dinadayāla |
dayā karo ārati haro , jaṇma jaṇma ura sāra ||

prema se boliye sadguru kabīra sāheba kī jaya .... (3)

|| visarjana sumiraṇa ||

jaya jaya satya kabīra, jaya muktāmaṇināma |
jaya jaya vaṇśa byālisa, jaya sukrita ko dhāma||
aṇśa sujana jana munijana ko, sadā karo kalyāṇa |
saba saṇtana ko kāma, saṇtana ko viśarāma ||
kathā visarjana hota hai, suno saṇta mati dhīra|
jinake sakala manoratha ko,pūrana karaiṇ kabīra ||
namo namo gurudeva ko, namo kabīra kripāla |
namo saṇta śaraṇāgati, sakala pāpa hoya chāra ||
guru sahatejī baṇkejī, caturbhujī dharmadāsa |
gosānyī cāra guru jagata main, kāṭe kāla ke phānsa ||
hājira ko hajūra, gāphila ko dūra, hiṇdu ke guru musalamāna ke pīra |
sāta dvīpa nava khaṇḍa main, sohaṃ ***satya guru kabīra*** ||
guru ko kije baṇdagī, koṭi koṭi praṇāma |
kiṭa na jāne bhringa ko, guru karale āpa samāna ||
bhringa jo nikale śaira ko, kiṭa pakaḍhale jāya |
kachuka dinana pratipala ke, kīṭa bhringa ho jāya ||
araba kharaba lon dravya hai, udaya asta lonrāja |
bhakti mahātama nā tule, ī saba kavane kāja ||
sāṇjha bhaye bādala phūle, aruṇa varaṇa kā raṇga |
aisī māyā phūle jagata men, raho na kāla ke saṇga ||
sādhu sādhu mukha se kahe, pāpa bhasma ho jāya |
āpa kabīra guru kahata hai, sādhū s adā sahāya ||
sādhu svarūpī guru hai, guru svarūpī āpa |
manasā vācā karmaṇā, kahaiṇ kabīra asathāpa ||
sādhu hamāre ātamā, hama sādhuna ke jiva |
saba sādhu main rami rahā, jasa mākhana main ghīva ||
sādhu hamāre ātamā, hama sadhuna ke deha |
saba sādhu main rami rahā, jasa bādala main meha ||
sādhu hamare ātamā, hama sādhuna ke śvāsa |
saba sādhu main rami rahā, jasa phulana main bāsa ||
śabda hamārā ādi kā pala pala karahu yāda |
aṇta phulegī mānhulī, upara ki saba bāda ||
śabda hī mārā gira paḍā, śabda hī choḍā rāja |
jina jina śabda vivekiyā, tinakā sarigau kāja ||

sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī, sāheba baṇdagī
prema se boliye sadguru kabīra sāheba kī jaya .... (3)

|| ādi gāyatrī ||

ādi gāyatrī sumirana sāra, sumirata haṇsā utare pāra |
koṭi aṭhāsī ghāta hai, yama baiṭhe tahān roka |
ādi gāyatrī sumira ke, haṇsā hoya niśoka ||

ghāṭi nākahī āge taba jāī, sakala dūta rahe pachatāyi |
āge makaratāra hai ḍorī, jahān yama rahe mukha morī |
ohaṃ sohaṃ nahāka ke, āge kare payāna |
ajara loka bāsā kare, jagamaga dīpa asthāna ||

sukha sāgara snāna kari, hoyī haṇsa kā rupa |
jāyi puruṣa darśana karaī, nisa dina parama anūpa |
ādi gāyatrī sumira ke, āvāgana nasāyi |
satya loka bāsā kare, kahaiṇ kabīra samujhāī ||

|| prabhāta gāyatrī ||

ādi gāyatrī amara sthāna, sohaṃ ṭatva le haṇsā lokasamāna |
sata gāyatrī ajapā jāpa, kahain kabīra amara ghara bāsa ||
satya hai amara satya hai śūnya, satyahi me kucha pāpa na punya |
kahain kabīra suno dharmadāsa, yaha gāyatrī karo prakāśa ||

|| madhyāhna gāyatrī ||

aciṇta puruṣa hiraṃbara chāyā, nāda biṇdu doī kartā āyā |
yama so jītā loka paṭhāyā, surati sanehi haṇsa kahāyā ||
aciṇta puruṣa ko gāyatrī, dīṇha kabīra batāī |
nisa dina sumirana jo karayi, karama bharama miṭa jāyi ||

|| saṇdhyā gāyatrī ||

bāraha yojana koṭa yaṇtra, jahān pala me chuṭe |
yehi bidhi saṇjhā jape, bharam lo āgama ṭūṭe ||
gāyatrī bramhā jape jape deva maheśa |
gāyatrī goviṇda paḍhe , satguru ke upadeśa ||
tāko kāla na khāyi, jo yaha saṇjhā ciṇhe |
ghaṭa men rahi alopa, kāḍhī hama bāhara kīṇhe ||
inapara laī siddhau bhānī, deva pūjā go śarīra |
bramha bācā putra dāsā, caplāna ugra haṇsani śarira ||
śabda pāyi hiradai dhare, asa kathi kahaiṇ kabīra ||

|| madhyarātri gāyatrī ||

kahaiṇ kabīra ajapā ghaṭa sūjhe, nigama nāma mohi jo būjhe |
tana mana dhana hi nichāvara kare, sāra nāma gahi bhavajala tare ||
aṣṭa siddhi nava niddhi māṇge so devun |
khurāsāna khura vedamukha gaṇgā pravāha ||
ripu sipa māragera tarāyi, navaguna dharajā surati pragaṭa hoī sūjhe |
khojo surati kamala ke tīra, sadguru mila gaye satya kabīra ||

prem se boliye sadguru kabīra saheba kī jaya .....